

चतुरनीक पुं. (तत्.) ब्रह्मा, चतुरानन।

चतुरपन पुं. (देश.) चतुराई, चतुरता, कुशलता।

चतुरश्र पुं. (तत्.) 1. ब्रह्म संतान नाम का केतु 2. ज्योतिष में चौथी अथवा आठवीं राशि 3. चौकोर या बराबर लंबाई चौड़ाई वाला खेत या क्षेत्र **वि.** (तत्.) 1. चौकोर, चार बराबर कोणों वाला चतुष्कोण, सुडौल।

चतुरा पुं. (तद्.) 1. चतुर, प्रवीण 2. चालाक, धूर्त।

चतुराई स्त्री. (तद्.) होशियारी, निपुणता, दक्षता 2. धूर्तता, चालाकी

चतुरानन पुं. (तत्.) चार मुखों वाले, ब्रह्मा।

चतुराश्रम पुं. (तत्.) मानव जीवन के चार आश्रम-ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास।

चतुरिंद्रिय पुं. (तत्.) चार इंद्रियों वाले प्राणी, मक्खी, भौरे, सर्प, (सांप) आदि, वैद्यक के अनुसार प्राचीन काल में इस प्रकार के जीवों को श्रवणेंद्रियहीन माना जाता था। इसी से ये चतुरिंद्रिय कहलाते हैं।

चतुरी पुं. (देश.) पुराने ढंग की एक प्रकार की पतली नाव जो प्रायः एक ही लकड़ी में खोदकर बनाई जाती है।

चतुरूपण पुं. (तत्.) सोंठ, काली मिर्च, पीपर तथा पीपरामूल का समूह (इन्हीं चार गरम पदार्थों का योग वैद्यक में चतुरूपण कहलाता है।)

चतुर्जातक पुं. (तत्.) इलायची (फल) दालचीनी (छाल), तेज पात (पत्ता), नागकेशर (फूल), इन चार पदार्थों का समूह या योग।

चतुर्थ वि. (तत्.) चौथा, चार की संख्या के क्रम वाला प्रयो. इस पुस्तक का चतुर्थ अध्याय बहुत बड़ा है।

चतुर्थक पुं. (तत्.) हर चौथे दिन आने वाला बुखार, चौथिया बुखार।

चतुर्थांश पुं. (तत्.) किसी वस्तु के चार भागों में से एक भाग, चौथाई 2. चार अंशों या भागों में से एक अंश का अधिकारी अर्थात् एक चौथाई भाग का मालिक।

चतुर्थाश्रम पुं. (तत्.) चार आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ तथा संन्यास) में से चौथा, संन्यास आश्रम प्रयो. मानव को चतुर्थाश्रम का आनंद लेने के लिए घर का मोह छोड़ देना श्रेयकर होता है।

चतुर्थी स्त्री. (तत्.) 1. किसी पक्ष (कृष्ण या शुक्ल) की चौथी तिथि, चौथ 2. वह विशिष्ट कार्य जो विवाह के चौथे दिन होता है 3. चौथा, एक रस्म जिसमें प्रेत कर्म करने वाले परिवार के यहाँ किसी की मृत्यु से चौथे दिन बिरादरी या सामाजिक एकत्र होते हैं 4. एक तांत्रिक मुद्रा 5. संस्कृत व्याकरण में संप्रदाय के स्थान पर लगने वाली विभक्ति पुं. (तत्.) तत्पुरुष समास का एक भेद जिसमें संप्रदान की विभक्ति लुप्त रहती है।

चतुर्थी विद्या स्त्री. (तत्.) चौथा वेद (अथर्ववेद) प्रयो. वैज्ञानिक दृष्टि से चतुर्थी विद्या अर्थात् अथर्ववेद बहुत महत्वपूर्ण है।

चतुर्दंत पुं. (तत्.) ऐरावत हाथी जिसके चार दाँत हैं **वि.** चार दाँतों वाला।

चतुर्दंष्ट्र पुं. (तत्.) 1. ईश्वर 2. कार्तिकेय की सेना 3. एक राक्षस।

चतुर्दर्शनावरण पुं. (तत्.) जैन शास्त्र में वह कार्य जिसके उदय होने से चक्षु द्वारा सामान्य बोध की प्राप्ति का विधान हो।

चतुर्दशपदी स्त्री. (तत्.) चौदह चरणों वाली अंग्रेजी साहित्य की एक विशेष प्रकार की कविता जिसे 'सानेट' कहा जाता है, आधुनिक काल में हिंदी में भी इस प्रकार की कविता होने लगी थी।

चतुर्दिश पुं. (तत्.) चारों दिशाएँ (चारों दिशाओं का समाहार) अव्य. चारों ओर।

चतुर्दोल पुं. (तत्.) 1. चार डंडों का हिंडोला या पालना 2. वह सवारी जिसे चार आदमी कंधों पर उठाते हैं-पालकी।

चतुर्द्वार पुं. (तत्.) 1. चार द्वार या चार दरवाजे 2. चार दरवाजों वाला घर **वि.** (तत्.) चार दरवाजों वाला।